International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 516-517

'संभावना डॉट काम' समग्र अध्ययन

Suman

Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

कविता चेतना की वह रूप रेखा होती है जो अनुभूति से कवि हृदय में उहापोह के बाद उपजती है। यह वह स्थिति है जो कवि को लिखने के लिए विवश करती है। इस विवशता का अनुभव से कोई लेना देना नहीं है। इन दोनों में बड़ा अंतर हैं, यहाँ बहुत बड़े कवि के साक्षात्कार का अंश लिखना चाहूँगा,'' जब मैं हिरोशिमा गया तो मैने एक पत्थर की उजली छाया देखी, मुझे लगा कि कितना प्रभाव होगा उस आग का जिसने इस पत्थर को पिघलाकर पानी बना दिया और इसी अनुभूति के आधार पर मैंने हिरोशिमा कविता की रचना की।''[1] बात अनुभव की और अनुभूति की चल रही थी कि पाया अनुभूति अनुभव की बड़ी बहन है। यदि यह बड़ी नहीं होती तो कवि हीरानंद सच्चिदानंद वात्सायन 'अज्ञेय' हिरोशिमा' की रचना नहीं कर पाते। यहाँ भूमिका में शैलेश भारतवासी भी यही दोहराते हैं, ''इस संकलन में सम्मिलित ज्यादातर कवि तकनीक की दुनिया से जुड़े हैं, इनमें कुछ तो ऐसे है जिन्होंने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य का कोई पन्ना नहीं देखा, लेकिन संवेदना की जिस जमीन पर खड़े होकर कविता की रचना होती है, वो इनके आस–पास ही है।''[2]

मन के भाव जनता के साथ बाँटना कोई कवि का काम नहीं होता और ना ही ऐसा करने से कोई कवि बन जाता। यदि ऐसा होता तो इतिहासकार दुनिया के सबसे बड़े कवि कहलाते। सूरदास को हिन्दी साहित्य में सबसे बड़ा कवि इसलिए माना जाता है क्योंकि वे चेतना से अनुप्राणित थे। उसकी चेतना उस की अनुभूति करती थी जो दुनिया का संचालक भाव है और नियामक चेतना है। श्रृंगार दुनिया को चलाने जीवन पहलू है और वात्सल्य इसी दुनिया का नियामक है। दूसरे शब्दों कहा जाए तो श्रृंगार से दुनिया वस्तुपरक हो जाती है, नीरस, विरान एवं भावशून्य और सन्तानोति इसकी परिणिति है। यह चेतना जितनी प्रवण सूरदास की थी दुनिया के किसी कवि की नहीं थी। इसलिए तो अंधे भक्त और कुंवारे साधु ने श्रृंगार में और वात्सल्य में जो विजय प्रापत की हैं वह साहित्य प्रेमियों एवं भक्तजनों दोनो समुदायों की अनुपम धरोहर हैं, अंग्रेजी साहित्य में जान मिल्टन भी अंधे थे, उनकी अनुभूति एवं चेतना तीव्र थी लेकिन वे सूरदास के समकक्ष नहीं ठहर पाते।

किसी रूप में कवि या सामान्य आदमी किसी कठिनाई से रूबरू होता है, वह उस कष्ट को भोगता है जो उसका अनुभव है, तो दुख होना और दुखी होना दोनो अलग बाते सामने आती है। आम आदमी केवल अपना दुख भोगता है जबकि कवि स्वयं का दुख भोगता है और साथ आम जनता का दुख भी महसूस करता है और दुखी होता है, यही चेतना है यही अनुभूति है। संभावना डॉट काम ऐसी ही चेतनाा से अनुप्राणित कवियों की कविताओं का संकलन है। ये सभी कवि Hindyugm.com पर 3.5 सालों में छपे हैं। ये ऐसे कवि है जो केवल छपे तो हैं लेकिन मुख्य साहित्य में स्वीकृति के मोहताज हैं। इनके नाम है,'' अलिलेश कुमार श्रीवास्तव, अनुराधा श्रीवास्तव, अपूर्व शुक्ल, अनवीश सुखलाल, गौतम राजविशी, गौरव सोलंकी, दर्पण शाह दर्शन, दिबेन, दिव्य प्रकाश दुबे, दीपक मशाल, देवेन्द्र कुमार पांडेय, निखिल आनंद गिरि, पावस नीर, पुष्कर चौबे, प्रदीप वर्मा, प्रमोद कुमार तिवारी, मनीष वंदे मातराम, मनु वेतखल्लुस मनुज मेहता, मुकुल उपाध्याय, मुकेश कुमार तिवारी, रचना श्रीवास्तव, रश्मि प्रभा, विनय कुमार जोशी, विपुल शुक्ला, विश्वदीपक तन्हा, राजीव सारथी, सत्य प्रसन्न सीमा कुमार, सुधीर सक्सेना, सुनीता यादव, सुरेश तिवारी, स्मिता पांडेय''[3]

यहाँ कहना संगत होगा क्योंकि छपास की भूख एक मानवीय कमजोरी है और इसके लिए मानव त्रिकडम भी करता है। परन्तु ये सब शुद्ध कविता अथवा शुद्ध साहित्य के दायरे से परे की चीज है। मैं इस बात को मानता हूँ कि कविता लेखन एक कला है और इस बात से नाराज हूँ कि कविता लेखन सीखा या सिखाया जा सकता है। संगीत कला, वाद्य कला, गायन कला, मूर्ति कला, चित्रकला पाक कला, राज कला, नृत्य कला, पाक् कला, मोहिनी कला के अतिरिक्त और अन्य तथा पहले वाली कविता को परे रखकर सरखी या सिखाई जा सकती है। एक काव्य कला ही ऐसी है जिसको सीखा या सिखाया नहीं जा सकता। इसलिए कवियों के लिए एक कहावत कही जा ती रही है कि कवि बनते नहीं जनमते हैं एक चेतना जो प्राकृतिक होती है उसे लेकर पैदा होना और अनुभूति द्वारा परिष्कृत कर उसे साहित्य बना पाठक के समक्ष प्रस्तुत करना कवि की सच्ची एवं शुद्ध कविता का अंश है। इस संदर्भ में पुस्तक के संपादक ने स्वयं भूमिका में लिखा, ''ऐसे में मैं सम्भावनाओं की बात करूं तो पूरी तरह से निडर नहीं रह सकता। जबकि साहित्य से कम जुड़े मेरे जैसे व्यक्ति को यह स्पष्ट नहीं हो पाया इस दौर में आखिर कविता क्या है? कवि कर्म क्या है।''[4] सही बात है कवि कर्म की। बहुत पहले की रचनाकार की दो पंक्तियों कवि कर्म की और संकेत करती हैं –

> ''केवल मंनोरंजन ही नहीं कवि का कर्म होना चाहिए
> उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।''[5]

यह उन दिनों की बात है जब भारत का जन मानस आजादी के लिए संघर्ष कर रहा था और कवि उनकी चेतना को अपनी कविता से बल देते थे। परन्तु आज संदर्भ बदल गए है आजादी मिल गई और भारत अंग्रेज मुक्त हो गया, परन्तु कवि कर्म वही है, समाज संचेतना और संचेतना और कवि। उस समय भी पूरक थे और आज भी पूरक हैं। पुस्तक में 15 पृष्ठ पर अखिलेश कुमार की एक कविता है ''ध्यान और योग।''

> ''उन्नीसवीं सदी में प्रेम बिका
> बीसवीं में रिश्ते बिक गए
> इक्कीसवीं सदी में बिक रहा है ध्यान और योग''[6]

सच्चाई है भारत में ही नहीं विश्व में यह सब हो रहा है, विश्व स्तरीय है भाव कवि के सराहनीय एवं उदेश्यपूर्ण। अनुराधा श्रीवास्तव की कविता आरी क्यों मौन रहती है।'' उनके अन्तर्मन

एवं अभिव्यक्ति है। हो सकता है इसमें उनका व्यक्तिगत संघर्ष हो परन्तु सत्य एवं समाज की परिभाषा से दूर है। स्वीकार्य सत्य है। आज नारी किस स्थिति में मौन होती है? अपूर्व शुक्ल का प्रकृति की और मुड़ने का सहास आज के युग की जरूरत है। अविनाश गौतम की देशभक्ति अन्तर्मन की वस्त्र है। आकांक्षा पारे जाना हुआ नाम है जो 'इस बार' में मन की पीड़ा अव्यक्त रखती है। ईश्वर के प्रति आस्था भी रखती है। आलोक उपाध्याप की गज़ल कविता से दूसरी चीजे हैं। आलोक शंकर आम आदमी का मन कविता में चित्रित करते हैं। उमेश पंत सठेरे की आशा में जीते नजर आते हैं। गुलशन सुखलाल शब्दों में अर्थ खोजते नजर आते हैं। गौतम राजशिशी फौजी है। इसलिए उनकी गज़ले टाईम पास सी नजर आते हैं। गौरव सौलंकी कविता में शब्दों से प्यार की परिभाषा गठने के फिराक में हैं। दर्शन जी बचपन की शरारत की छाह अब तक छोड़ नहीं पाए है, यह शब्द कला सराहीनीय है। दिबेन जी का जीवन रस है मछली रानी में। कृष्ण और द्रौपदी मिथक का आधुनिक रूप है। दिव्य प्रकाश दुबे का जीवन आज की भागभागी से प्रभावित है।

''कुछ खो गया अलग–अलग किरदारो में'' दीपक मशाल दो कविता से समाज का मनोवैज्ञानिक चित्रण करते नजर आते है। देवेन्द्र पांड्ेय का जिक्र सामाजिक सरोकार वाला है। निखिल आनंद गिरि अपनी शून्य परिकल्पना में मस्त नजर आते हैं। पातस नीर के कविता में वैयक्तिक सरोकार है। पुष्कर जी की शब्दावली सराहनीय है। प्रदीप वर्मा की कविता में मिथकीय प्रतिमान नजर आते हैं। प्रमोद कुमार तिवारी सामाजिक शैली के कवि के रूप में नजर आते हैं। मनीष वंदेमातरम् मस्त हृदय की अभिव्यक्ति शब्दों के रूप में करते है और कविता बन जाती है। मनोज बंसल की गजलों में उम्मीद की शमा जलती ही नहीं है। मनुज मेहता प्रेम को परिभाषित करने के प्रयासरत् है। मुकुल उपाध्याय का सार्थक काव्य है। मुकेश कुमार तिवारी ज्वलंत मुद्धों के कवि है। रचना श्री वास्तव अवनों को शब्दों से श्रद्धांजलि देती है। याद जीवन का वह पहलू है जो उसे अतीत से जोड़े रखता है। रश्मि प्रथा जीवन शैली की कवयित्री हैं। विनय कुमार जोशी अपनी व्यवस्था में अपनी कद की परिभाषा से परिचित नजर आते हैं। विपुल शुक्ला की प्रेरणा उनके आस–पास की है।

''आह बापू मेरे लिए लाते थे
बुधिया देख क्या लाया हूँ
उसके लिए मुझे कितना सताते थे
अचानक उसने कुछ सोचा
फिर हाथ बढ़ाया।''[8]

विश्वदीपक तन्हा की क्षणिकाएँ अखबारी तो है पर भावपूर्ण अवश्य हैं। जीवन सारथी का जीवन संघर्ष मय एवं चेतन भी है। सत्य प्रसन्न में तेलगू संस्कृति द्रष्टत्य है। सीमा कुमार का संयम समय की संघर्ष भरी परिभाषा में डोलता नजर आता है। सुधीर सक्सेना, सुरेश तिवारी, स्मिता पांडेय की कविताओं में जीवंत चेतना के दर्शन होते हैं। यहां नेपाली कविता का जिक्र हमारी समालोचना के विषय की परिखा में नहीं हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी में बहुत बडे कद वाले साहित्य कार हैं। उन्होंने कविता के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।'' कविता मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बंधों के संकुचित मंडल से उपर उठाकर लोक सामान्य भाव भूमि पर ले जाती है, यहां जगत की नाना गतिविधियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है। इस भूमि पर पहुंचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता, वह अपनी सता को लोकन किए रहता है, उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती। यही अनुभूति कविता कहलाती है।''[9]

जब घोर दुखनमें तुलसी को माँझा तो उनके हृदय से मानस की धारा निकली। रत्नावली से बहुत प्रेम करते थे बेचारा, मिली केवल वेदना, दुःख एवं जलालत बस अनुभूति ने मानस का दामन पकड़ लिया। जब क्रौंच तड़पा तो आदि कवि की ''मा निषाद.....।'' की कल्पना रामायण बन गयी।

और कितने उदाहरण दूँ और कितनी बार बताऊँ, चेतना के बिना कविता लिखना, बिना आग के रोटियाँ सेकने की कल्पना के समान है। और अनुभूति से बनती है चेतना। ''मनुष्य अपने भावों, विचारों और व्यापारों के लिए साथ मिलाता, कहीं लड़ाता अन्त तक चला जाता है, इसी को जीना कहते हैं।''[10] कवियों का जीना उनकी अनुभूति के आधार पर होता।

प्रस्तुत संकलन की भूमिका में संपादक ने साफ–साफ लिखा है कि ''इस संकलन में संमिलित 38 में से दो को छोड़ दे तो कोई भी कवि कभी मुख्यधारा में प्रकाशित नहीं। लेकिन आज वे इस संकलन में है। सीधा सा अर्थ कहीं कहीं किसी रूप में चेतना से अनुप्राणित हैं उनकी कविताएँ अन्यत्र संपादक यह भी लिखता है, यह हो सकता है कि ये कविताएँ कविता अकनिता के भेद से हटकर लिखी गई हों, लेकिन कहीं ना कहीं बहुत सी कविताओं में बेहतर मानवीय संवेदनाएँ हैं।

अस्तु, उक्त संकलन मानवीय चेतना के कवियों की कविताओं का संकलन है। चुनीदा कवियों का यह संकलन उन कवियों का संकलन है जिनकी कविता में हिन्दी काव्य की संभावनाएँ नजर आती है। निश्चय संवेदना/चेतना या अनुभूति का तत्व इन कविताओं के मूल में है जो कवि के जीवन और उसके लेखन का सारतत्व होता है। वस्तुत यह शोध पत्र इन कवियों कविताओं की चेतना तत्व को समझने का प्रयास है। यदि मेरी कलम इस तत्व को रूपाचित करने का काम करती है तो मैं अपने श्रम का सार्थक समझूँगा।

संदर्भ सूची

1. अज्ञेय के साक्षात्कार का अंश, क्षितिज भाग–11 पृष्ठ–23
2. संपादकीय संभावना डॉट काम शैलेस भारतवासी
3. विषय सूची संभावना डॉट काम
4. संपादकीय
5. स्वाति भाग–11 पृष्ठ–42
6. सम्भावना डॉट काम पृष्ठ 15
7. वही– पृष्ठ 86
8. वही– पृष्ट 172
9. चिंतामणि रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ 123
10. वहीं –